om-10_Page 1 and 2 18-08-2014 10:03 Page 5

अश्वमेध यज्ञ की मेधा थीं दादी प्रकाशमणि

परमात्मिक यज्ञ की शोभा और उसे अपनी मेधावी छवि से चलाने वाली शान्ति का नाम दादी प्रकाशमणि है। वह मेधा की अविरल धारा थीं। एक ऐसी विदुषी सशक्त नारी जिनकी अध्यात्म प्रज्ञा प्रखर थी। कहा भी जाता है कि नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाये तो वह समाज में क्रान्ति ला सकती है। दादी प्रकाशमणि का अनुपम मूल्यनिष्ठ जीवन, आध्यात्मिक शक्ति एवं प्रशासनिक दक्षता द्वारा उन्होंने जीवन के तरीके को विकसित किया।

दादी जी को ऐसे ही रत्नप्रभा का सम्मान नहीं दिया गया। उन्होंने बाल्यावस्था से ही स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन की संकल्पना के साथ कार्य किया। दादी जी दिव्य बुद्धि व मेधा की अदभुत मिसाल थी। उनके लिए ही एक बात दिल से निकलती है कि ''किन लफ्जों में बयां करूं उनकी उल्फत को यहां।

सुन सभी लेते हैं, बयां करने वाला कोई नहीं।उनकी मेधा की परख तो इसी बात से लगाई जा सकती है कि उन्होंने इच्छाओं को जो दुनिया की सबसे अ-सहज स्थिति है, को पार किया। वह कहती इच्छा मात्रम अविद्या का यदि सभी ध्यान रखें तो सहज ही कई समस्याओं से पार हो सकते हैं। इच्छाएं मनुष्य को कई प्रकार से ऊंचे से नीचा तथा नीचे से ऊपर का अनुभव कराती है। वे कहती इच्छा चीज़ ही ऐसी है, जो अच्छा है उसे बुरा बना देती है। मनुष्य इच्छा करता है कि मैं अच्छा बनूं, यह इच्छा भी अच्छा बनने नहीं देती। दादी कहती थीं कि यदि आपको अच्छा का ज्ञान है तो अच्छा नेचुरल बनना चाहिए न कि इच्छा से। मनुष्य इच्छा करता है कि मुझे सभी प्यार की दृष्टि से देखें, तो इच्छा से सभी प्यार की दृष्टि से नहीं देखेंगे। यदि मैं सभी को प्यार की दृष्टि से देखूंगा तो सभी से प्यार मिलेगा। इच्छायें वस्तु एवं वैभवों के हैं और ये वस्तु या वैभव सब अल्पकालिक हैं, वह चीज़ आज है तो कल नहीं है, और जब नहीं है तो फीलिंग आयेगी। और यदि फीलिंग या इमोशन्स के आधार पर जीयेंगे तो फेल हो जायेंगे। इच्छा से मेहनत करने पर मनुष्य बहुत भारी हो जाता है, क्योंकि इसमें हार-जीत दोनों है। मुख्य प्रशासिका के तौर पर व्यस्तताओं के बावजूद स्वयं का पुरुषार्थ बनाये रखना और आत्मोन्नति बनाये रखना किसी साधारण व्यक्ति के बस की बात नहीं। दादी जी की मेधा इस कदर प्रखर थी कि संस्था के सिद्धांतों के अनुरुप कभी भी किसी के समक्ष हाथ फैलाया हो। वह कहती इस बात पर ही तो निश्चय चाहिए, कि कराने वाले अपने आप ही हमसे करवायेगा।

मेधा का ही एक अनुपम उदाहरण है कि दादी जी ने 16 प्रभागों का गठन किया। जिसमें प्रमुख रूप से शिक्षाविद, युवा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, समाज सेवा आदि-आदि शामिल हैं। जिन प्रभागों के अंतर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध प्रारम्भ हुआ। यही प्रभाग तो अपने-अपने क्षेत्र में विश्व-बंधुत्व का बोध जगा रहे हैं। दादी जी मेधावी थीं ना, इसलिए उनमें विवेक व भावना का संतुलन था। वे कहती थीं जिस घर में ज्यादा मेहमान आते हैं, वह घर सबसे अधिक सौभाग्यशाली होता है। वे मेहमान भगवान के बच्चे हैं, पवित्र आत्माएं हैं, व इस धरा की अनेक महान विभूतियां हैं। हमें इन मेहमानों की पूरी खातिरदारी करनी चाहिए। वे सच्ची कर्मयोगी थी, सारे दिन कर्म करके वे ऐसी दिखती जैसे कुछ किया ही ना हो। उनका विवेक यह कहता था कि जो सब कहें वही करो। कभी भी अपने को उन्होंने प्राथमिकता नहीं दी।

- ब्र.कु.अनुज, डिफेन्स कॉलोनी,दिल्ली

Peace of Mind - TV Channel

Cable network service
"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)
DTH Services
Videocon D2H: Channel no. 497,
Reliance Big TV: Channel no. 171
Smart Phone Service
Android | Blackberry | iPhone | iPad | Tablet | Visit: http://pmtv.in
Mobile Audio Service
Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day
अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालु करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

Airtel Digital TV Channal No. 686

सूचना–ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-
Email- mediabkm@gmail.com
M-8107119445

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: मैं एक गृहस्थी माता हूँ। मेरी एक लड़की है। जब से वो आठवीं क्लास में गयी है, तब से जहाँ भी जाती है, एक बॉयफ्रेन्ड बना लेती है। अब उसके बहुत सारे बॉयफ्रेंड हैं। वो उनसे ही बात करती रहती है। हमारी कुछ नहीं सुनती। हम इस लड़की से बहुत परेशान हैं। उसके लिए क्या करें?

उत्तर: विज्ञान ने जहाँ मनुष्य को अनेक सुख-सुविधाओं के साधन दिए हैं, वहीं उनका दुरुपयोग करके मनुष्य अपने लिए बहुत सारी समस्याएँ भी पैदा कर रहा है। विज्ञान ने हमें मोबाइल एक अच्छी वस्तु दी। इससे हमारा कम्युनिकेशन सरल हो गया। परंतु अनेक लोग इसका दुरुपयोग भी करने लगे। इन चीज़ों का यदि सदुपयोग किया जाता है तो ये वरदान बन जाते हैं, अन्यथा श्राप साबित होते हैं।

आजकल बच्चों में वासनाओं का अति प्रकोप है। इसलिये वे बॉयफ्रेन्ड-गर्लफ्रेन्ड बहुत बनाते हैं और अपने चरित्र से विमुख हो जाते हैं। इसका प्रभाव उनकी एकाग्रता पर पड़ता है। उनका मन विचलित रहने लगता है और वे अपनी पढ़ाई में असफल होने लगते हैं। इसकी कीमत उन्हें बड़ी भारी चुकानी पड़ती है और माँ-बाप के लिये भी एक बड़ी समस्या बन जाती है। हम सभी कलयुग के अंत में जी रहे हैं। ये उसी का तामसिक प्रभाव है।

आप अपनी बच्ची को अच्छे वायब्रेशन्स द्वारा परिवर्तित करने का अभ्यास करें। भोजन बनाते हुए उसमें पवित्र वायब्रेशन्स भरें और संकल्प करें कि इस पवित्र भोजन को खाने से इस बच्ची का चित्त शुद्ध हो जाए। भोजन में पवित्र वायब्रेशन्स भरने के लिए भोजन बनाते समय 100 बार याद करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। एक समय फिक्स करके आधा घण्टा उस आत्मा को योगदान दें तो धीरे-धीरे उसके व्यवहार और संस्कार में परिवर्तन आता जाएगा।

प्रश्न: मैं 40 वर्षीय पुरुष हूँ। मैंने पिछले मास अपना चेक-अप करवाया तो एच.आई.वी. पॉज़ीटिव पाया गया। मैं इससे मानसिक रूप से परेशान हो गया हूँ। जिन-जिन को पता चला, वो भी मुझे थोड़ी टेढ़ी नज़र से देखने लगे हैं। मेरी दवाई तो चालू है, परंतु मैंने सुना है कि राजयोग भी बीमारियों में बहुत मदद करता है। मुझे ऐसी कोई विधि बताइये, जिससे मैं पूरी तरह ठीक हो जाऊँ?

उत्तर: आपको मानसिक रूप से पूरी तरह स्वस्थ रहना है तो जितना अधिक हो सके ये अभ्यास करना है कि मैं आत्मा परम पवित्र हूँ...भृकुटि की कुटिया में हूँ...मुझसे पवित्रता की सफेद किरणें निकलकर मेरे मस्तिष्क और पूरे शरीर में फैल रही है...एक मिनट तक ऐसा अभ्यास करना और कई बार करना। कम से कम 5 बार सारे दिन में अवश्य करना।

निश्चित रूप से ये बीमारी ऐसी ही है कि मनुष्य को स्वयं में भी शर्म आती है और दूसरों की दृष्टि भी बदल जाती है। आप अच्छे स्वमान का अभ्यास करना जैसे मैं विजयी रत्न हूँ, मैं महान आत्मा हूँ, मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ। इसके साथ-साथ लोगों की बातों को ज़्यादा भाव ना देना। आपको अपनी अच्छी स्थिति से संसार को ये दिखाना है कि हम बीमारियों में भी सहज भाव से जीवन जी सकते हैं। जितना आप स्वमान में रहेंगे, उतने सभी के सम्मान के पात्र बनते जाएंगे और आपके स्वमान के वायब्रेशन्स आपको भी स्ट्रांग बना देंगे। सदा मस्त रहो। ये याद रखना कि मैंने तो अपना शरीर-आत्मा प्रभु-अर्पित कर दिया है। अब वो इसे जैसे चाहे चलाये। साथ ही साथ जब भी पानी पियो, उसे 7 बार इस स्वमान से चार्ज करके ही पीना कि मैं परम पवित्र हूँ। निश्चित रूप से आपकी ये बीमारी ठीक हो जाएगी। इसके अलावा एक घण्टा योग प्रतिदिन इस बीमारी के लिए करना। तो योगबल से वो विकर्म नष्ट हो जाएगा जिसके कारण ये बीमारी हुई है और आप सम्पूर्ण स्वस्थ हो जाएंगे। हमारी ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

प्रश्न: आजकल संसार में व्यक्ति पूजा का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। कई लोग भवनाओं के कारण इसे बहुत ज़्यादा पसंद करते हैं। परंतु कई लोग इसका विरोध भी करते हैं। देहधारी कई देवता भी भारत में हुए हैं। उनकी भी भारत में पूजा होती है, परंतु देहधारी महान आत्माओं की पूजा करना कहाँ तक यथार्थ है? क्या हमें देहधारियों की पूजा करनी चाहिए या अव्यभिचारी रूप से केवल एक परमात्मा को ही याद करना चाहिए?

उत्तर: सर्वश्रेष्ठ भक्ति तो वही है जिसमें एक भक्त अति प्यार और श्रद्धा से एक परमात्मा को ही याद करे। दूसरे नंबर की भक्ति है देवी-देवताओं की। उनका गायन पूजन भी यथार्थ है क्योंकि उनकी आत्मा भी पवित्र है और देह भी। परन्तु इसके अलावा जो भी पूजा-पाठ और भक्ति की जाती है, वो तीसरे नंबर पर आती है।

जो भी गुरु आदि और महान पुरुष हैं, यद्यपि वे वंदनीय हैं परंतु उनका शरीर तो विषय-वासनाओं से ही बना है। भले ही वे ब्रह्मचर्य का पालन भी करते हों परंतु उनके देह को पावन नहीं कहा जा सकता। और जिसकी देह व आत्मा दोनों पावन ना हो, उनकी पूजा करने से क्षणिक भावनाएँ तो पूर्ण हो सकती हैं लेकिन सर्वोच्च लक्ष्य को नहीं पाया जा सकता।

आज लोग अपने गुरुओं की भी बहुत पूजा करते हैं। इससे उनकी छोटी-मोटी इच्छाएँ तो पूर्ण हो जाती हैं लेकिन वो परमात्मा से दूर जाते रहते हैं क्योंकि उनका योग परमात्मा से नहीं, अपने गुरु में रहता है जबकि परमात्मा की याद के बिना किसी का भी कल्याण होगा नहीं। देहधारी महान पुरुषों में भावना होना तो अच्छी बात है, परंतु परमात्मा को भूलकर उन्हें ही सबकुछ मान लेना, ये यथार्थ नहीं है। अत: आत्म-कल्याण के लिए एक परमपिता से ही बुद्धि लगानी चाहिए, जिन्हें याद करके ये महापुरुष भी महान बने, जिन्हें याद करके देवताओं ने भी देवत्व प्राप्त किया। हमें भी उनके ही याद में मग्न होना चाहिए।

प्रश्न: बाबा कहते हैं कि मन के द्वारा सबको वायब्रेशन्स दो, वाचा द्वारा ज्ञान दान करो और कर्मणा के द्वारा गुणों का दान करो। ये तीनों कार्य साथ-साथ करो। इसकी सहज विधि क्या है?

उत्तर: सारे दिन यदि हमारे मन में श्रेष्ठ विचार होंगे तो सारे दिन हमारे चारो ओर श्रेष्ठ वायब्रेशन्स फैलते रहेंगे। जितना सारा दिन हम योगयुक्त रहेंगे तो हमसे चारो ओर लाइट और माइट फैलती रहेगी क्योंकि योगी आत्माएं चलते-फिरते लाइट हाउस हैं। इसी कर्मक्षेत्र पर रहते हुए हम स्वमान का अभ्यास करेंगे तो उसी तरह के वायब्रेशन्स चारो और फैलते जायेंगे और जब भी कोई व्यक्ति हमें मिले तो हम उसे ज्ञान दें, उसे सच्ची राह दिखायें। इस भावना के साथ कि इसका भी प्रभु-मिलन हो जाए। लेकिन ज्ञान बहुत विस्तार से नहीं, सार में देना चाहिए।

कर्म करते हुए यदि हम सरलचित्त होंगे, यदि हमारे चेहरे पर मुस्कान होगी, कर्म करते भी हम यदि शांत स्वभाव को कायम रखेंगे, कर्म में ऊपर-नीचे होने पर हम तनावग्रस्त नहीं होंगे, यदि कर्मक्षेत्र पर हम बहुत सहनशील बनकर रहेंगे, हमारी वाणी में मधुरता होगी, हम क्रोध और अहंकार से मुक्त होंगे तो लोग हमसे अनेक गुण सीखते रहेंगे। ये होगा कर्म द्वारा गुणों का दान। तो ये सब कर्म आप सारे दिन में करते रहें। इन तीनों सेवाओं से अत्यधिक पुण्य का बल मिलता है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com